रविवार दिनाँक 22-09-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

सब सजनों ने स्मरण रखना है कि दिनाँक 2 अक्टूबर को सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की अपार महिमा का विस्तृत रूप से बखान होने जा रहा है। उसको सुनने व समझने के प्रति किसी विध् भी कमजोर नहीं पड़ना। कहने का तात्त्पर्य यह है कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की वाणी का पूर्ण महत्त्व समझने हेतु आप और आपके जितने भी सगे-सम्बन्धी, दोस्त-मित्र या सहेलियाँ हों, उनको समझदारी से संग लेकर ठीक दस बजे वसुन्धरा पहुँच कर अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लेना है। इसमें जात-पात, धर्म-भेद यानि भिन्नता का कोई सवाल नहीं है, सब बराबर/सम हैं। अतः याद रखो यह कार्यक्रम भेद-भाव मिटाने हेतु होने जा रहा है इसलिए इसमें सब आ सकते हैं। अब अगर इस बात को स्मृति में रखकर मन लगाकर इस पर क्रिया करनी है तो मिलकर बोलोः-

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

सजनों इसमें दूरी-समीपता की भी कोई बात नहीं है। जहाँ भी, जो भी अपने आप को बहुत बुद्धिमान, समझदार समझता हो, पढ़ा-लिखा हो, आ सकता है। उस दिन उन सबको प्रोत्साहित कर बताया जायेगा कि जो कार्य सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के बावजूद आप सजन करने में असफल रहे, वह कैसे बाहर वालो ने कर दिखाया है। सजनों अगर आज भी आप सम्भल जाते हो तो पिछली क्रिया-हीनता के लिये क्षमादान प्राप्त हो सकता है। अन्यथा अपने भाग्य के निर्माता तो आप स्वयं ही हो। इस बात की समझदारी से भाल करो और अपने पर उपकार करते हुए अन्यों पर परोपकार करो। यह निःसन्देह आपकी इच्छा-शक्ति पर निर्भर करता है। अगर आप अपनी अज्ञानमय अवस्था में ही बना रहना चाहते हो तो मत आना। यह भी आपकी ही इच्छा पर निर्भर करता है। यहाँ याद रखना आपकी इच्छा के आधार पर ही कुदरत, जो भी आपने भोग भोगना है, वह प्रदान करेगी। इसीलिए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि मानव ! अपनी अच्छी खरीद कर, मन्दी खरीद मत कर'। अतः सजनों बुराई को तत्क्षण त्याग दो व जितने भी बुरे भाव-स्वभाव अन्तर्घट में हैं, उन्हें छोड़ दो ताकि आपके अन्दर सद्भावना पनपे और आप इन्सानियत में आकर मानवता के प्रतीक बन जाओ। जब तक मानवता के प्रतीक नहीं

बन पाते तब तक सतयुग की संस्कृति से अनिभिज्ञ ही रहोगे क्योंकि सतयुग का सद्ज्ञान ही मानवता का प्रतीक है। इस सन्दर्भ में जानो कि जब तक सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित सद्ज्ञान धारण नहीं करते, तब तक जन्म-मरण के अधिकारी बने रहोगे। अब आपका कल्याण आपके अपने हाथ में है। चाहो तो अपने वैरी बनो या फिर सजन बनो। इसमें अन्य कोई न तो कोई किसी प्रकार हस्ताक्षेप कर सकता है और न ही आपकी कोई सहायता कर सकता है। सजनों जानो सजनता ही आनन्द का अनुभव कराती है जबकि वैर-भाव दूरियाँ पैदा करता है यानि यह नकारात्मक भावों का जनक है। अतः इस भाव से सम्बन्ध स्थापित करना मूर्खता के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। इसलिए कह रहे हैं सम्भलो, सम्भलो, सम्भल ही जाओ सजनों। इसी में आपकी शान है क्योंकि यह नश्वरता के स्थान पर अमरता का प्रतीक बनने की शुभ मंगलकारी बात है। अब निर्णय आपका अपना है। अब भजन सुनोः-

दिखा देसन महाबीर दिखा देसन, सारी दुनियां दा मन हिला देसन।।

घोड़े ते सवार होके गली गली ओ फिर रहे ने, जेहड़े भाई मनणकार न होसन।

उन्हां नूं बली समझा देसन, दिखा देसन महाबीर दिखा देसन।।

पाप पुण्य जो करे सब दा बली जी देख रहे।

जेहड़ी भैण मनणकार न होसी, उसनूं गदा दा बल दिखा देसन।।

हुण भाईयो तुसी मन जावो, नहीं तां अपना आप दिखा देसन।

खबरदार हो जाओ मेरे भाईयो, बली आप तुहानुं समझा देसन।।

मन लवो मेरे भाईयो, उपदेश बली कोलों लै जाओ।

राम लक्ष्मण सीता प्यारी नूं बली जी आप मिला देसन।।

जिन्हां नाम लिया होया है, बली युक्ती आप बता देसन।

जेहड़े भाई नूं चाह है रघुनाथ जी दी, बली जी आप मिला देसन।

सुत्ते हो तां हुण जागो भाईयो, बली रघुनाथ जी दे चरणां विच बहला देसन।

तीनों ताप देख के बली दुनियां दे विच आ गये।

दुखड़े सब दे दूर होसन, त्रिलोकी नूं बली जी हर्षा देसन।।

गाफ़ल सुत्तियां भाईयां नूं, बली जी आप जगा देसन।

रघुवीर महाबीर जी फिर रहे ने, हुण इको रूप दिखा देसन।

वक्त है हुण सम्भल जावो, अखीरी वक्त हुण आ गया।

शरण आवो महाबीर जी दी, ओ दीन पर दयाल होसन।।

दासी हुण ए पुकार रही शरणीं आवो महाबीर जी दी।

जेहड़े भाई बिगड़े होए ने, उन्हां नूं बली समझा देसन।।

इस भजन के अंतर्गत कलुकाल के भटके हुए इन्सानों को सुगम रास्ते पर अग्रसर करने हेतु सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि हे इन्सानों ! सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण-शरण में स्थिरता से बने रहना सुनिश्चित करो अन्यथा जो परिवर्तन आने वाला है, उसके साथ ही आपका भाग्य बदल जायेगा। सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण-शरण से दूर रहकर अपने अच्छे भाग्य यानि सौभाग्य को दुर्भाग्य में परिवर्तित मत करो। उसके लिये हर पल, हर क्षण अपने ख़्याल/सुरत को उनके चरणों में स्थिर रखो क्योंकि यही मानवता के प्रतीक बनने का सूचक है। सजनों जानो, जो भी अपने जीवन को इससे विपरीत दिशा में आगे बढ़ायेगा, वह तीनों तापों से त्रस्त हो जाएगा। अतः मन्दी खरीक करके अपने जीवन के प्रति लापरवाही मत करो यानि जगतीय/इन्द्रिय रसों में उलझकर अपने साथ धोखा मत करो। अपितु सचेतन अवस्था में बने रहो तथा समाज और परिवारजनों को भी वैसा बनाने के लिये सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित हर वचन को मन से प्रवान कर, अपने आचार-विचार-व्यवहार में उतार लो। सजनों यदि आपने ऐसा कर लिया तो समझो कि आप अपना जीवन सुचारू ढँग से जी सकोगे। इसके विपरीत अगर आपने इस संदर्भ में कलुकाल के प्रभाव से ग्रस्त हो तनिक सी भी लापरवाही की तो उसका दुष्परिणाम स्वयं आपको ही भुगतना पड़ेगा।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों अपने मन में एक ज्ञानमय इन्सान बनने की लग्न उत्पन्न करो और ज्ञानमय इन्सान बनने के लिये आत्मज्ञान प्राप्त करने के प्रति किसी भान्ति भी कमजोर मत पड़ो। कमजोर पड़ गये तो अपने जीवन में अनगिनत परेशानियाँ खरीदने वाले नादान सजन कहलाओगे। जानो नादान वे सजन होते हैं जिन्हें सत्संग के महत्त्व का ज्ञान ही नहीं होता और जो सत्संग को आरम्भ से न सुनकर मध्य से सुनते हैं। ऐसे में वे अपने स्थान को किस भान्ति प्राप्त कर सकते हैं? विडम्बना की बात तो यह है कि कोई सांसारिक वस्तु मिल रही हो तो वे नादान वहाँ सर्वप्रथम पहुँवने वालो में होते हैं परन्तु सत्संग में आने के लिये वे इसके विपरीत आचरण दर्शाते हैं। जान लो सजनों सत्संग यानि जहाँ परमार्थी धन की वर्षा हो रही होती है, वहाँ विलम्ब से पहुँचना मूढ़मत्तता को दर्शाता है। ऐसे मूढ़मत इन्सान स्वार्थी प्रवृत्ति के होते हैं और किसी स्वार्थपूर्ति हेतु ही सत्संग में आते हैं। इस संदर्भ में सजनों जान लो कि अब भी जो सजन सत्संग/द्वारे की निर्धारित नीतियों के विरुद्ध चलते रहे उन्हें अब द्वारे से कोई भी सुविधा प्राप्त नहीं होगी। आशय यह है कि अब जो नीतियों की हर क्षण पालना करेगा, केवल वही दुःख-सुख में प्रशाद की सुविधा को सहर्ष प्राप्त कर सकेगा। सजनों द्वारे की नीतियों के विरुद्ध चलना या उनकी अवहेलना करना अपने व अपनों के प्रति गुनाह है, धोखा है। धोखेबाज इन्सान को तो दूर रखना ही उचित होता है। जैस कि अभी आपने सुना है कि इन्सानों सम्भल जाओ और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के उपदेश अनुसार परिवारों में जीवन व्यतीत करना सुनिश्चित करो। माँ-बाप होने के नाते अपनी सन्तानों को सद्-विचारों में ढालने का प्रयास करो। अपने खून को सत्य से सींचना ही सही रूप में माता-पिता का फर्ज पूरा करने की निशानी होती है। इसके विपरीत अपने खून को असत्य से सींचना कुदरत द्वारा मिली हुई दात से वैर कमाने की बुरी बात होती है। जो भी ऐसा करता है वह कुदरती नियमानुसार कुदरत के प्रहार से नहीं बच सकता। इसको चेतावनी ही समझो क्योंकि अभी आपने सुना हैः-

खबरदार हो जाओ मेरे भाईयों, बली आप तुहानुं समझा देसन।।

मन लवो मेरे भाईयों, उपदेश बली कोलों लै जाओ।

वक्त है हुण सम्भल जावो, अखीरी वक्त हुण आ गया।

शरण आवो महाबीर जी दी, ओ दीन पर दयाल होसन।।

इस तथ्य के दृष्टिगत अपने शहर के हर सजन को सत्संग से जोड़ना सुनिश्चित करो। इस हेतु परिवारों में जो आचार-संहिता सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित है, उसको अपनाना

सुनिश्चित करो। याद रखो सजनों अगर आप ऐसा कर लेते हो तो फिर जीवन पर्यन्त दुःख आपको नहीं सता सकता। अतः मनमत से उबरकर गुरमत के अनुसार जीवन जीना स्वीकार करो। अब इस मतलबी दुनियाँ, मतलबी आडम्बर जो रचा हुआ है उससे खुद का खुद बचाव करो।

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

जेहड़ा है नाम चलाओ के चलदे जाओ, महाबीर जी मिलनगे।

जेहड़े नाम नाल प्यार तुआडा।

प्यार अपना न हटाओ के चलदे जाओ, महाबीर जी मिलनगे।।

नाम अनेक रूप है एक।

सजनों कोई ही नाम चलाओ के चलदे जाओ, महाबीर जी मिलनगे।।

ओन्हां दे बगैर जोत दा पाना है मुश्किल।

जोत नाल मेल तुसां खाओ के चलदे जाओ, महाबीर जी मिलनगे।।

दयालु हैन ओ सुखकारी, जैंदे सब कोई है ओ पुजारी।

पुजारी नाम कहाओ के चलदे जाओ, महाबीर जी मिलनगे।।

हनुमान श्री राम पुजारी, झण्डे ते गुपट खड़े हो गए।

अर्जुन दे होये सुखकारी के राम पुजारी, महाबीर जी मिलनगे।।

(यह शब्द श्री साजन जी कह रहे हैं)

हनुमान जी दा मन्त्र जपो मेरे सजनों कलुकाल हुण हटना जे।

हुण वारी दाते हनुमान जी दी ओन्हां दा नाम हुण जपना जे।।

कलुकाल हटे सतवस्तु आसी, इक नाम चतुर्भुजधारी होसी।

हनुमान जी हैन ओ अमर, फिर रोग न कोई राहसी।।

(श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

साजन जी देखो पब्लिक, उपरों ता पा रही सूट साड़ियां।

पर हृदय अन्दरों ते निगाह आ रहियां खोखलियां ओ सारियां।।

बाहर ते कोट पतलून पावो नाले लावो टाई।

जीवन अपना नहीं बनाया उमरा ऐवें गवाई उमरा ऐवें गवाई।।

जन्म दी बाज़ी जितनी सजनों हार तुसां क्यों खाई, सजनों हार तुसां क्यों खाई।।

हुण वक्त, तुसां सम्भलो सजनों फिर वक्त नहीं आना जे।

जन्म दी बाज़ी हार बैठे फिर उमरा पछोताना जे, फिर उमरा पछोताना जे।।

यह कीर्तन सुनकर भी अगर आपके अन्तर्पट नहीं खुले तो समझो आपने अपने साथ वैर कमाया और जब अन्त समय अन्तिम श्वास निकलेगा तो निश्चित रूप से आपका परिणाम हार ही होगा। तब पछताने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि करनी का दुष्परिणाम तो भोगना ही पड़ेगा। अपनी अक्ल गँवाकर आपने जन्म बर्बाद कर लिया तो निन्दा के पात्र तो बनोगे ही बनोगे। सजनों जानो कि इस कीर्तन के माध्यम से आपको सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग प्राप्त करने की पूर्ण युक्ति बता दी गई है। उस युक्ति को जो भी सच्चे मन से प्रवान करेगा वह सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग प्राप्तकर उनसे जीवन का मार्ग-दर्शन प्राप्त कर सकेगा। इस प्रकार वह निष्पाप जीवन-यापन करते हुए मोक्ष का अधिकारी बन सकेगा और उसका जीवन आबाद हो जाएगा। यह सुनकर भी अगर कोई नादानी/दुर्बलता दिखायेगा व लापरवाही करेगा और केवल संसारी भोगों के अधीन होकर तन की शान यानि सूट, साड़ियों, टाई इत्यादि लगाने में अपनी शान समझेगा और अकड़कर चलेगा तो मानो कि यह कामुकता का भाव है। इस दिखावे द्वारा देखने वालों के भीतर 'काम' जाग्रत करना व शारीरिक आकर्षण का भाव पैदा करना है। यह इन्द्रियों के वशीभूत होकर उनमें उलझने की बात है। ऐसा न हो इस हेतु याद रखो कि मानव के पास

तो विवेकशक्ति है जिसके बलबूते पर वह इन्द्रियतीत होकर जगत में निष्काम भाव से विचर सकता है। सजनों यदि यह योग्यता होते हुए भी यदि हम इसें धारण नहीं करते तो हमसे बड़ा मूर्ख कोई नहीं। माना कि हमारे माता-पिता ने हमें यह योग्यता नही दी, पर अब हमें वह योग्यता सत्संग से प्राप्त हो रही है, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से मिल रही है तो इस दात को युक्तिसंगत समझना व सम्भालना तो हमने स्वयं ही है। यहाँ विडम्बना की बात तो यह है कि हम युक्ति समझते हुए भी उसे प्रवान नहीं करते यानि अपने प्रति लापरवाह रहते हैं क्योंकि दुष्चरित्रता ही हमें भाती है। इस दुष्चरित्रता में सजनों सब कुछ आ जाता है - चोरी, ठगी, निन्दा-चुगली सब कुछ। तभी तो हर समय सब कुछ पाने की कामना हमें सताती है और इस हेतु हम कोई भी प्रयास यानि छल-कपट, धोखा आदि देने स नहीं सकुचाते। आज यही तो सब कुछ चल रहा है। सजनों अपने साथ ऐसा न करो अपितु अपने सजन बनो यानि अपने प्रति जागृति में आओ। इस संदर्भ में सर्वप्रथम स्वीकारो कि जो भी हम कर रहे हैं वह हमारे द्वारा गलत हो रहा है क्योंकि यह एक मानव का चलन कदापि नहीं है। हमें तो मानव का धर्म अपना कर मानवता का प्रतीक बनना है। अन्यथा यदि मानवता के विरुद्ध चलन अपनाया तो निश्चित ही अमानव कहलाएंगे और उसका दुष्परिणाम भी भोगोगे ही।

इस सन्दर्भ में हम स्पष्ट शब्दों में कह रहे हैं कि अपनो को सत्संग में न लाना नादानी है, मूर्खता है। इस मूर्खता को जो खरीद करेगा वह भुगतना भी। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि अब अन्तिम समय निकट आ गया है। अतः अब अन्तर्मन से सत्संग के साथ जुड़ जाओ। आपका सत्संग कभी भी खण्डित न हो, उस नीयत में आ जाओ। इस सन्दर्भ में परिवार के प्रत्येक सजन को अपने संग मिला लो ताकि परिवार की एकता मजबूत हो, एक रास्ता हो और आपस के समस्त दुर्भाव, द्वि-द्वेष समाप्त हो जायें। इस प्रकार चाहे कोई छोटा हो, बड़ा हो या कोई और हो सबके पास एक ही ज्ञान हो। आशय यह है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर झुक जाओ यानि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के वचनों के आगे नत-मस्तक हो जाओ और उसमें विदित वचनों अनुसार जीवन जीना आरम्भ कर दो। फिश्र कह रहे हैं सजनों समय को पहचानते हुए सारे खबरदार हो जाओ। हर शहर में सत्संग चलाने वालों ने और सत्संग पर आने वालों ने खबरदार होना है। जो भी घर में छोटा-बड़ा है, उसको साथ लेकर आओ। सत्संग के नियमानुसार छोटे बच्चे का हाथ पकड़कर अपने साथ बिठाओ ताकि वह बचपन से ही नीति अनुसार उठना-बैठना सीख लें, सो अब सम्भल जाओ।

सजनों याद रखना कि २ अक्टूबर के कार्यक्रम के लिये हर सजन निमन्त्रण पत्र ले जा सकते हैं। अपने सम्पर्क में आने वाले सजनों को अपने साथ लेकर आना है। हर सजन ने कम से कम दस सजन तो लाने ही हैं। सजनों यह परोपकार कमाने का सुनहरी अवसर आपको प्रदान कर रहे हैं, चाहे हारो चाहे जीतो। तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग प्राप्त करने हेतु जो युक्ति अभी सुनी है उस युक्ति को प्रवान करना सुनिश्चित करो और अपने जीवन में परम आनन्द भर लो। अब कीर्तन सुनोः-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

गरुड़ ताड़ ताड़ तक्के साजन जी दे वल, साजन जी दे वल हनुमान जी दे वल।

हनुमान जी दे वल गरुड़ ताड़ ताड़ तक्के साजन जी दे वल।।

श्री रामचन्द्र जी वी खिड़ खिड़ हस्से, देख साजन हनुमान जी दे वल।

देख साजन हनुमान जी दे वल, हनुमान जी दे वल।।

साजन जी इक बात असां बताऊनी ए, सारी दुनियां दी हालत सुनाऊनी ए।

सारी कहानी सुनो दिलचस्पी विच आ के, दिलचस्पी विच आ के।

जेहड़ा सोया पड़े अपना जन्म बरबाद करे, जेहड़ा सोया सोया जागे जन्म आबाद करे।।

जेहड़ा फर्ज अदा वल्लों रोये पड़े, ओ चौरासी भुगतने नूं जाये खड़े।

ओ चौरासी भुगतने नूं जाये खड़े, जाये खड़े।।

जेहड़ा ही रोंदा इन्सान हस पड़े, कई जन्मां दा उजड़या क्यों न वस पड़े।

अजीब कहानी सुनाऊं साजन जी, एदा नतीजा पिच्छों बताऊं साजन जी।

एदा नतीजा पिच्छों बताऊं साजन जी, बताऊं साजन जी।।

(अब श्री साजन जी सजनों को कह रहे हैं)

झूठ हनेरा छडो मेरे सजनों, झूठ दा सजनों छडो प्रभाओ।

झूठ हनेरा मत ढूँढो मेरे सजनों, ओ न दर दर ठोकरां खाओ।

ओ न दर दर ठोकरां खाओ, ठोकरां खाओ।।

झूठ हनेरा ख़रीद करे इन्सान, छल कपट दा करे ओ व्यापार।

कन्डे औझड़ खाई, खोद लई अपने लई, हुण ओ डिगने नूं खड़ा है तैयार।

हुण ओ डिगने नूं खड़ा है तैयार, खड़ा है तैयार।।

झूठ है तुहाडा खाना पीना और बोल चाल, झूठ दा पाया सजनों सिंगार।

झूठ दा करो तुसां वर्त वर्ताओ, झूठा है सजनों तुहाडा ए प्यार।

झूठा है सजनों तुहाडा ए प्यार, तुहाडा ए प्यार।।

(श्री हनुमान जी कह रहे हैं)

शब्दः-

चलो साजन जी दरबार में, मोती नगर में कैसी हो रही रचना।

महाबीर जी रघुनाथ जी गाना गा रहे, ओथे कैसी हो रही घटना।।

'पद्यमराज' अर्थ करे और करने लगे, इन्सानां दी दित्ती होश भुला।

चीकां मार मार ढावन और भजने लगे, सीस इन्सानां दे गये ने चक्कर खा।।

सच वर्तो सजनों, सच वर्त वर्ताओ, सच नाल करो प्यार।

सच खण्ड वस्से, वस्से निरंकार, ओ सच खण्ड वस्से, वस्से निरंकार।।

सजनों स्टेज से शास्त्र के एक-एक वचन से परिचित कराने का जो अनथक प्रयास चल रहा है उस प्रयास की यथार्थता को समझो। इस प्रयास द्वारा चौरासी भुगतने के स्थान पर अमरता को पाओ। इस संदर्भ में बार-बार सुनने के उपरान्त भी अगर आप सुमति में आना उचित नहीं समझते तो मान लो कि आपने अपनी किस्मत को बर्बाद करने का निश्चय ले लिया है। हम देख रहे हैं कि अधिकतर सजन कलुकाल की झूठ-चतुराई व छल-कपट के मार्ग पर से अपने आप को हटाने में सक्षम नहीं हो सके। ऐसे सजन नादानी कर रहे हैं। यह नादानी दर्शाती है कि इनको अपने जीवन के साथ तनिक सा भी लगाव नहीं है यानि इनको मानव चोले के महत्त्व का ज्ञान ही नहीं है। इनकी इतनी अज्ञानता, इतनी मूर्खता दुर्भाग्यपूर्ण है। अतः अब हमें होश में आने की परम आवश्यकता है। सजनों होश में आकर अपने गृहस्थाश्रम का निरीक्षण करो कि कौन से भाव-स्वभाव का परस्पर वर्त-वर्ताव हो रहा है। इस विषय में अपने पारस्परिक स्वभावों को गहनता से समझने की आवश्यकता है। जाँचना है कि उस वर्त-वर्ताव से क्या हमारे परिवारों में एकता पनप रही है?

सजनों इस बात को समनने के पश्चात् भी यदि आप अपना आत्मनिरीक्षण नहीं करते और बहरे बन बात को अनसुना कर देते हो तो जान लो कि आपका कोई भी उपचार नहीं कर सकता यानि आपकी बीमारी लाईलाज हो गई है। सजनों ऐसा मत करो और जागृति में आ जाओ। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का हर वचन जाग्रत अवस्था में आने का आवाहन दे रहा है। अतः हमें हर वचन की कद्र करनी चाहिये। इस सन्दर्भ में जानो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के वचनों की कद्र न करना अपनी यानि स्वयं की कद्र न करने जैसी बुरी बात है। अब सोचो यदि मैं ही अपनी कद्र नही करता तो दूसरे मेरी इज्ज़त क्योंकर करेंगे? इस तरह मैंने अपना अपमान खुद ही कर लिया है। अब अपमानित जीवन को तो चारों तरफ से अपमान ही मिलता है। विचार करो सजनों कि कामयुक्त इन्सानों की भान्ति यदि मैं होश में नहीं आ रहा तो यह कैसी मदहोशी है? सजनों अपने साथ और दूसरों के साथ भी ऐसा कदापि मत करो। अपने साथ ऐसी त्रुटि नहीं करोगे तभी तो आपकी अक्ल टिकाणे आयेगी और आप दूसरों के साथ भी ऐसा करने की भूल नहीं करोगे।

सजनों जानो कि परिवर्तन सदा स्वयं से आरम्भ होता है। दूसरों को कहते रहो कि बदलाव इस भान्ति या उस भान्ति करो तो उसका कोई भी फायदा नहीं होता। अपना बदलाव खुद करोगे तो निश्चित ही संगी-साथियों पर सद्प्रभाव जाता है और तद्नुसार वह अपना बदलाव करना भी स्वीकार लेते हैं। इन्सानियत में आने की और अन्य सजनों के अन्दर इन्सानियत का भाव पैदा करने की यही एक युक्ति है। इस युक्ति को प्रवान करो और बुरे

से अच्छा बनने का आदर्श स्थापित करने में कमजोर मत पड़ो। इस क्रिया के दौरान यदि किसी से कुछ सुनना भी पड़े तो भी कोई बात नहीं। कोई कहे कि आप सारी उमर तो झूठ बोलते रहे और अब सत्य की बात कर रहे हो। कोई बात नहीं, उनकी बात भी सत्य है क्योंकि अब सत्य को स्वीकारना है और परिवर्तन के द्वारा कुल ब्रह्माण्ड में बदलाव लाने की हिम्मत दिखानी है। आध्यात्मिक क्रान्ति का यही मकसद है कि आपके अन्तर्घट से पूर्णतया बुराई समाप्त हो और सत्य स्थापित हो जाये। सो आध्यात्मिक क्रान्ति द्वारा आत्मविजयी इंसान बन जाओ। अब अपने पर मेहर करो और बोलोः-

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

सजनों अब अध्यात्मवाद अपनाने में कमजोर मत पड़ना। अध्यात्मवाद का भण्डार सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, कुदरत की धरोहर आपका सीसताज है। उनके वचनों को अपने रोम-रोम, रग-रग में बसा लो तो आप ओजस्वी व तेजस्वी हो जाओगे। फिर आपके सामने कोई भी नहीं ठहर सकेगा और आपको भ्रम में डालकर मानवता के विपरीत कुछ भी करने को उकसा नहीं सकेगा। इस तरह आप सत्यनिष्ठा से धर्मपरायण इन्सान बन जाओगे। ऐसा हो गया तो फिर भगवान भी आपको प्यार करेंगे औश्र अपने घर परमधाम में स्थान दें देंगे। इस बात को स्मृति में रखते हुए आगे सजनों बढ़ जाना।

आप अपने लक्ष्य में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।